प्रातः क्लास 2/10/68 ओमशान्ति पिताश्री शिवबाबा याद है?
ओमशान्ति। रूहानी जादूगर बैठ रूहानी बच्चों को जो बाप से भी तीखे जादूगर हैं उन्हों को समझाते हैं। ....म यहाँ क्या कर रहे हो। यहाँ बैठे2 कोई चुरपुर नहीं। बाप अथवा साजन सजनियों को युक्ति बता रहे हैं। साजन कहते हैं यहाँ बैठे2 तुम क्या करते हो। अपन को तुम ऐसे(ल0ना0) श्रृंगार रहे हो। कोई समझेगा। तुम ....हाँ सब बैठे हो, नम्बरवार पुरुषार्थ तो फिर है ही। बाप कहते हैं श्रृंगारी बनना है। तुम्हारा एमऑबजेक्ट ही यह (है)। भविष्य अमरपुरी के लिए। यहाँ बैठे तुम क्या कर रहे हो। पैराडाइज की श्रृंगार के लिए पुरुषार्थ कर रहे हो। ....सको क्या कहें? कमाई कहें? यहाँ बैठे तुम अपन को चेंज कर रहे हो। उठते–बैठते, चलते बाप ने यह मन्मनाभव की चाबी दे दी है। बस। सिवाय इनके और कोई भी फालतू बातें सुन सुनाकर टाइम वेस्ट मत करो। तुम अपने ही (श्रृं)गार को लगे रहो। दूसरा करता है वा नहीं इसमें तुम्हारा क्या जाता। तुम अपने पुरुषार्थ में रहो। कितनी समझ की बात है। कोई नया सुनेगा तो जरूर वन्डर खावेगा। तुम्हारे में कोई तो अपना श्रृंगार कर रहे हैं, कोई और ही ....गार रहे हैं। टाइम वेस्ट परचिन्तन आदि में करते रहते हैं। बाप बच्चों को समझाते हैं तुम सिर्फ अपन को देखो कि हम क्या कर रहे हैं। बहुत छोटी युक्ति बताई है सबको। मन्मनाभव। बस। एक ही अक्षर बस है। तुम यहाँ बैठे हो परन्तु बुद्धि में है कि सारा सृष्टि का चक्र कैसे हम फेरते आये हैं। अभी हम फिर से विश्व का श्रृंगार बन रहे हैं। तुम कितने पदमापदम भाग्यशाली हो। यहाँ बैठे2 तुम कितना कार्य करते हो। कोई हाथ पांव तो बाबा नहीं लगाते हैं। सिर्फ विचार की बात है। तुम कहेंगे हम यहाँ बैठे2 ऊँच ते ऊँच विश्व का श्रृंगार कर रहे हैं। मन्मनाभव। मन्मनाभव का मंत्र कितना अच्छा है। इस योग से ही तुम्हारे सभी पाप भस्म होकर आत्मा सोने की हो जावेगी तो फिर कितने शोभनिक हो जावेंगे। अभी आत्मा पतित है तो शरीर भी पतित है। शरीर की हालत देखो कैसी है। फिर तुम्हारी आत्मा और काया कंचन बन जावेगी। कमाल है ना। तो अपन को ऐसा श्रृंगार करना है। दैवीगुण भी धारण करनी है। बाप ....को..... ..... की बात है। सिर्फ एक बाप को याद करते रहो तो तुम्हारा श्रृंगार सारा बदल जावेगा। बाप से तुम बड़े जादूगर हो। तुमको युक्ति बताते हैं ऐसे2 करने से तुम्हारा श्रृंगार बन जावेगा। अपना श्रृंगार न करने से मुफ्त अपन को नुकसान पहुँचाते हैं। अभी तुम समझते हो हम भक्तिमार्ग में क्या2 करते थे। सारा श्रृंगार ही बिगर कर क्या बन पड़ा है। अभी एक ही मन्मनाभव अक्षर से, बाप की याद से तुम्हारा श्रृंगार होता है। बच्चों को कितना अच्छी रीति समझाकर रिफ्रेश करते हैं। यहाँ बैठे तुम क्या करते हो। याद की यात्रा में बैठे हो। अगर कोई का ख्याल और–2 तरफ होगा तो श्रृंगार थोड़े ही होगा। खुद श्रृंगारी बने तो फिर औरों को भी रास्ता बताना है। बाप आते ही हैं ऐसा श्रृंगारी बनाने। कमाल है बाबा आप की। आप कैसी युक्ति अच्छी बताते हो, उठते–बैठते, चलते हमको अपना श्रृंगार करना है। कोई तो अपना श्रृंगार कर फिर दूसरों का भी करते हैं, कोई तो अपना भी श्रृंगार नहीं करते हैं तो दूसरों का भी श्रृंगार बिगारते रहते हैं। फालतू बातें सुनाकर उनकी अवस्था को भी नीचे गिरा देते हैं। खुद भी श्रृंगार से रह जाते हैं तो दूसरों को भी रहा देते हैं। तो अच्छी रीति सोच करो। बाबा कैसी2 युक्ति बताते हैं। भक्तिमार्ग के शास्त्र पढ़ने से यह युक्तियाँ नहीं आती। शास्त्र तो है भक्तिमार्ग के। तुमको कहते हैं किसी शास्त्रों को नहीं मानते हो बोलो हम तो सभी मानते हैं आधा कल्प भक्ति की है, शास्त्र पढ़ी है। तो कौन नहीं मानता। रात और दिन होते हैं तो जरूर दोनों को मानेंगे ना। यह है बेहद का दिन और रात। मनुष्यों की तो बिल्कुल ही बुद्धि इडीयट है। एक्टर होकर कुछ भी नहीं जानते। तो बाप कहते हैं मीठे मीठे बच्चों तुम अपना श्रृंगार करो। टाइम वेस्ट मत करो। टाइम बहुत थोड़ा है। तुम्हारे में बड़ी विशाल बुद्धि चाहिए। बहुत प्रेम रहना चाहिए आपस में। टाइम वेस्ट न करना चाहिए; क्योंकि तुम्हारा टाइम तो बहुत ही मोस्ट वैल्युएबुल है। कौड़ी से हीरे जैसा तुम बनते हो। मुफ्त में थोड़े ही इतना सुन रहे हो। कोई कथा है क्या। बाप अक्षर ही एक सुनाते हैं। बड़े2 आदमियों को जास्ती बात थोड़े ही करनी चाहिए। बाबा तो सेकण्ड में जीवनमुक्ति

..... बताते हैं। यह हैं सबसे ऊँच श्रृंगार वाले। तब तो इन्हों के ही चित्र है जिनको बहुत–2 पूजते .....ते हैं। जितना बड़ा आदमी होगा उतना बड़ा मंदिर बनावेंगे। बड़े श्रृंगार करेंगे। आगे तो देवताओं के चित्र पर हीरों का हार भी पहनाते थे। बाबा को तो अनुभव है ना। बाबा ने खुद भी हीरों का हार बनाया था ल0ना0 के लिए। वास्तव में तो इन्हों जैसा पहरवाइश यहाँ कोई बना न सके। अभी तुम बना रहे हो नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। तो बाप समझाते हैं बच्चों अपना टाइम वेस्ट मत करो। न अपना टाइम वेस्ट करो न दूसरों का करो। बाप युक्ति बहुत ही सहज बताते हैं। मुझे याद करो तो तुम्हारे पाप कट जाये। याद बिगर इतना श्रृंगार हो न सके। तुम यह बनने वाले हो ना। दैवी स्वभाव धारण करना है। इसमें कहने की भी दरकार नहीं; परन्तु पत्थरबुद्धि होने कारण सभी कुछ समझाना पड़ता है। है यह एक सेकण्ड की बात। बाप कहते हैं मीठे2 बच्चों तुमने अपने बाप को भूलने से कितना श्रृंगार खत्म कर दिया है। बाप तो कहते हैं चलते–फिरते उठते–बैठते श्रृंगार करते रहो। माया भी कम नहीं है। कोई2 लिखते हैं बाबा आपकी माया बहुत..... अरे हमारी माया कहाँ है। यह तो खेल है ना। मैं तो तुमको माया से छुड़ाने आया हूँ। मेरी माया फिर काहे की। इस समय पूरा ही इनका राज्य है। जैसे इस रात और दिन में सेकण्ड का भी फर्क नहीं हो सकता। यह फिर हैं बेहद के रात और दिन। इसमें एक सेकण्ड का भी फर्क नहीं पड़ सकता। अभी तुम बच्चे नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार ऐसा श्रृंगार कर रहे हो। बाप कहते हैं चक्रवर्ती राजा बनना है तो चक्र फिराते रहो। भल गृहस्थ व्यवहार में रहो। इसमें सारा बुद्धि से ही काम लेना है। आत्मा में ही मन बुद्धि है। यहाँ तुमको बाहर का गोरख धंधा तो कुछ भी नहीं। यहाँ आते ही हो तुम अपने को श्रृंगारने रिफ्रेश होने। बाप पढ़ाते तो सभी को एक जैसा हैं। यहाँ बाप के पास आते हैं नये2 प्वाइंट्स सम्मुख सुनने। फिर घर जाते हैं तो जो कुछ सुना वह बाहर निकल जाता। यहाँ से बाहर निकलने से ही झोली छांट लेते हैं। जो सुना इस पर मनन–चिंतन नहीं करते हैं। तुम्हारे लिए तो यहाँ एकान्त की जगह बहुत अच्छी है। बाहर में तो खटमल फिरते रहते हैं। एक/दो के रक्त पीते रहते हैं। तो बाप बच्चों को समझाते हैं यह तुम्हारा टाइम मोस्ट वैल्युएबुल है। इनको तुम वेस्ट मत करो। अपन को श्रृंगारने की बहुत युक्तियाँ मिलती है। अभी शास्त्रों का तो भूसा बुद्धि से निकालो। मैं सभी आत्माओं का उद्धार करने आता हूँ। मैं आया हूँ तुमको विश्व की बादशाही देने। तो अब मुझ बाप को याद करो। काम काज करते भी बाप को याद करते रहो। इतने सभी ढेर आत्माएँ आशुक हैं एक परमपिता परमात्मा माशुक के। वह सभी जिस्मानी कथाएँ कहानियाँ आदि तो तुमने बहुत सुनी हैं। अभी बाप कहते हैं वह सभी भूल जाओ। भक्तिमार्ग में तुमने मुझे याद किया और प्रतिज्ञा भी किया हम आपके ही बनेंगे। ढेर के ढेर आशुकों का एक माशुक है। भक्तिमार्ग में तो कोई भी उनको नहीं जानते हैं। सभी गपोड़े ही गपोड़े हैं। ब्रह्म में लीन होंगे यह होगा, यह सभी फालतू बकवाद करते रहते हैं। एक भी मनुष्य मोक्ष को नहीं पा सकता। यह तो अनादि बना बनाया ड्रामा है। इतने सभी एक्टर्स हैं। इसमें जरा भी फर्क नहीं हो सकता। बाप कहते हैं सिर्फ एक अलफ को याद करो। तो तुम्हारा यह श्रृंगार हो जावेगा। अभी तो यह बन रहे हो ना। स्मृति में आया। अनेक बार हमने यह श्रृंगार किया। कल्प कल्प बाबा आवेंगे हम आपसे यह सुनेंगे। कितनी गुह्य प्वाइंट्स हैं। बाप ने कितनी अच्छी युक्ति बताई है। वारी जावेंगे ऐसे बाप पर। आशुक माशुक भी सभी एक जैसे नहीं होते। यह तो सभी आत्माओं का एक ही माशुक है। जिस्मानी कोई बात ही नहीं। पुरुषोत्तम संगमयुग पर ही बाप से यह युक्ति मिलती है। कहाँ भी जाओ, खाओ, पीओ, घूमो–फिरो, नौकरी करो अपना श्रृंगार करते रहो। आत्माएँ सभी एक माशुक के आशुक हैं। सभी उनको ही याद करते हैं। कोई–कोई बच्चे कहते हैं हम तो 24 घंटे याद करते हैं; परन्तु सदैव तो कोई कर ही नहीं सकते। बहुत में बहुत दो अढ़ाई घंटे तक लिखते हैं। जास्ती अगर कोई लिखते हैं तो बाबा मानता ही नहीं। दूसरों को स्मृति दिलाते नहीं हो तो कैसे समझे कि तुम याद करते हो। क्या कोई डिफीकल्ट बात है। कोई इनमें खर्चा है। कुछ

भी नहीं। बेहद के बाप को सिर्फ याद करते रहो तुम्हारे पाप कट जावेंगे। दैवीगुण भी धारण करनी है। पतित कोई शान्तिधाम वा सुखधाम में जा न सके। बच्चों को कहते हैं सभी अपन को भाई2 समझो। 84 जन्मों का पार्ट अभी पूरा होता है। यह पुराना चोला छोड़ने का है। ड्रामा देखो कैसा बना हुआ है। यह भी तुम जानते हो नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। दुनिया में कोई भी कुछ नहीं समझते हैं। हरेक अपने अन्दर से पूछे। बाप थोड़े ही अन्तर्यामी है जो एक एक के अन्दर बैठ देखेंगे। हरेक अपने से पूछे हम बाप के मत पर चलते हैं? चलेंगे तो श्रृंगार भी अच्छा होगा। एक/दो की उल्टी बातें सुन और फिर सुनाकर अपना ही श्रृंगार बिगाड़ देते हैं। तो दूसरों का भी बिगाड़ देते हैं। बच्चों को तो इसी धून में लगा रहना चाहिए कि हम ऐसे श्रृंगार धारण कैसे करें। बाकी जो कुछ है वह ठीक है। सिर्फ पेट के लिए रोटी आराम से मिले। ..... में पेट का आठ आना खर्चा है। भल लोग का चार आना। क्या खाते हैं। सिर्फ वाटी(रोटला) और लाल मिर्ची। कितने ताकतवान हैं। बूढ़ी–2 माइयाँ भी कितना बोझ उठाती हैं। तुमको रायलपने की आदत है, उनको तो गरीबी की ही आदत पड़ी हुई है। भल तुम सन्यासी हो; परन्तु राजयोगी हो। न बहुत ऊँचा न बहुत नीचा। खाओ भल; परन्तु जवान हिर न हाये। यह एक/दो को याद दिलाओ। शिवबाबा याद है? वरसा याद है? विश्व की बादशाही का श्रृंगार याद है? विचार करो यहाँ बैठे–बैठे तुम्हारी क्या कमाई है। इस कमाई से ही अपार सुख मिलना है। सिर्फ याद की यात्रा से। और कोई तकलीफ नहीं। भक्तिमार्ग की रात में मनुष्य कितने धक्के आदि खाते हैं। अभी बाप आये हैं श्रृंगारने तो अपना अच्छी रीति ख्याल करो। भूलो मत। मया भुला देती है। फिर तो टाइम बहुत ही वेस्ट करते हैं। तुम्हारा तो यह बहुत ही वैल्युएबुल टाइम है। पढ़ाई की मेहनत से मनुष्य क्या से क्या बन जाते हैं। बाबा तुम्हारे को और कोई तकलीफ नहीं देते हैं। सिर्फ कहते हैं। बाप को याद करो। बस। कोई भी किताब आदि उठाने की दरकार ही नहीं। बाबा कोई किताब उठाते हैं क्या। बाप कहते हैं मैं आकर इस प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा एडाप्ट करता हूँ। प्रजापिता है ना तो प्रजा इतने कुखवंशावली कैसे होगी। बच्चे एडाप्टेड होते हैं। वरसा बाप का मिलने का है तो बाप ब्रह्मा द्वारा एडाप्ट करते हैं। इसलिए उनको माता कहा जाता है।

यह भी जानते हो बाप का आना बड़ा एक्युरेट है। एक्युरेट टाइम पर आते हैं फिर एक्युरेट टाइम पर जावेंगे। दुनिया की बदली तो होना ही है। शास्त्रों में लिख दिया है तो किसकी भी बुद्धि में नहीं आता। कहते हैं क्या सभी शास्त्र झूठे शास्त्र हैं। व्यास भगवान झूठे थे। भगवान कौन है यह भी विचारों को पता नहीं है। जबकि व्यास भगवान है तो फिर भगवान को पत्थर भित्तर में क्यों कहते हो। बिल्कुल ही अकल चट हो गया है। अभी बाप तुमको कितना अकल देते हैं बाप के मत पर चलना है। स्टुडेन्ट्स जो पढ़ते हैं वही बुद्धि में चलता है ना। तुम भी यह संस्कार ले जाते हो। जैसे बाप के संस्कार है तुम्हारी आत्मा में भी वैसे ही संस्कार हैं। फिर जब यहाँ आवेंगे तो वही पार्ट रिपीट होगा नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। अभी अपने दिल से पूछो कितना पुरुषार्थ किया है अपने को श्रृंगारने। टाइम वेस्ट तो नहीं करते। बाप सावधान करते हैं वाह्यात बातों में कहाँ भी टाइम न गंवाओ। बाप के श्रीमत पर कायम रहो। मनुष्य मत पर न चलो। तुमको यह पता थोड़े ही था हम पुरानी दुनिया में हैं। बाप ने बताया है तुम क्या थे। इस पुरानी दुनिया में कितने अपार दुख हैं। यह भी ड्रामा अनुसार पार्ट मिला हुआ है। ड्रामा अनुसार अनेकानेक विघ्न भी पड़ते हैं। बांधेलियाँ कितना पुकारती हैं। बाबा हमको इससे छुड़ाओ। एक द्रौपदी को 5 पति थोड़े ही नंगन करते हैं। यह बातें शास्त्रों में बैठ बनाई है। बाकी ऐसे थोड़े ही है। सभा में थोड़े ही नंगन करेंगे। जुआ आदि की बात शास्त्रों में लिखने से मनुष्य भी वह सीख गये हैं। तो बाप समझाते हैं यह ज्ञान और भक्ति का खेल है। वन्डरफुल ड्रामा है। इतनी छोटी आत्मा में सारा अविनाशी पार्ट नूँधा हुआ है। कब घिसता ही नहीं। वन्डर है ना। अच्छा मीठे2 रूहानी बच्चों को रूहानी बाप दादा का यादप्यार गुडमॉर्निंग। रूहानी बच्चों को नमस्ते।

विश्व की बादशाही का श्रृंगार याद है?